15. महात्मा और उनका दर्शन: वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता

फ़ाखिर अबरार

बापू,महात्मा,राष्ट्रीय पिता आदि संबोधनों से हम भलीभांति परिचित है| यह सभी संबोधन हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के लिए है | महात्मा गांधी का जन्म सन् २ अक्तूबर १८६९ मे भारत के (गुजरात) कठियावाड़ के पोरबंदर नामक स्थान मे हुआ था| गांधी जी ने प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर मे ली तथा हाई स्कूल की शिक्षा राजकोट के स्कूल मे प्राप्त की | १८८७ मे गांधी जी ने समल्दास कॉलेज भाव नगर से मैट्रिक की परीक्षा पास की |उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन मे श्रीवन पितृ भक्ति नमक नाटक पढ़ा तथा सत्य हरीशचंद्र नमक नाटक देखा |इन नाटको का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वह सत्य के प्रबल समर्थक बन गए |

महात्मा गांधी सिर्फ एक राजनीतिज्ञ ही नहीं थे बल्कि वह एक महान दार्शनिक , समाजसेवक,शिक्षा शास्त्री ,ज्ञानी ,संघर्षकारी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे | उनके इन्ही सब कार्यो और गुणों को देखते हुए रविन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें सबसे पहले 'महात्मा' की उपाधि दी थी | महात्मा का अर्थ महान आत्मा होता है | सत्य ही कहा टैगोरजी ने ऐसे काम करना आम पुरुष की बात नहीं है| एतिहास गवाह है इस तरह के कार्य महात्माओ ने ही किये है | महात्मा गांधी ने अपने जीवन भर समाज के लिए संघर्ष किया |अपने देश के लोगो की तमाम समस्याओ का समाधान तलाशते रहे और उनकी समस्याओ को दूर भी किया |गांधी जी ने न केवल अपने देश के लोगो के लिए कार्य किये बल्कि संसार के सभी लोगो के लिए कार्य किया|

गांधी जी ने देखा कि भारतीय जनता की हालत बहुत दर्दनाक है तब उन्होंने निशचय किया कि वह अपना सारा जीवन भारत वासितो के नाम कर देगे और उन्होंने ऐसा ही किया| गांधी जी ने देखा की भारतीयों की आवाज़ उनके ही देश मे दबी हुई है और उनकी ज़िन्दगी कठिनाइयों से घिरी हुई है | गांधीजी ने भारतीयों की जमीनी हकीक़त जानने के लिए पूरे भारत का भ्रमण किया |कश्मीर से कन्या कुमारी तक जगह- जगह जन सभाए की| भारतीयों की समस्याओं को सुना तथा उनको गहरे से समझा और अपने भाषण से लोग मे ज्ञान की वर्षा की | इससे पहले किसी ने इस तरह आकर जनता के बीच उनकी समस्याओं को न तो सुना था नाहीं समझा था

समस्याओ के समाधान की बात तो दूर की है| गांधी जी ने ऐसा करके उनके हदय मे अपना स्थान बना लिया **और आज भी भारतीय हृदय में उनकी अमिट छवि विद्यमान है |**

गांधी जी ने हमेशा अपने अहिंसावादी विचार ,सत्य ,असहयोग को ही अपना शस्त्र बनाया | गांधी जी देश मे फैले अस्पर्शता , नशा मुक्ति गरीबी के खिलाफ आन्दोलन चलाते रहे लोगो को सामाजिक बुराइयो से दूर करने की शिक्षा देते तथा गरीबी दूर करने के लिए हस्तकला का ज्ञान प्राप्त करने का प्रोत्साहन देते | जाति - वाद और उच्च-नीच के भेद भाव को मानवता के आधार पर समझाने और अपनी आत्मा को पवित्र रखने क ज्ञान देते **रहे** | माहात्मा गांधी संघर्षकारी होने के साथ साथ एक महान आदर्शवादी दार्शनिक भी थे |उनका ईश्वर और आत्मा पर अटल विशवास था तथा आत्मा को परमात्मा का अंश मानते थे |उनके अनुसार जिस तरह सूर्य की किरणें अनेक है परन्तु उन सब का स्रोत्र एक ही है उसी प्रकार संसार मे विभिनता होने के बावजूद इसकी रचना करने वाला परमात्मा एक ही है | गांधी जी ईश्वर को हर जगह मौजूद मानते थे उनके अनुसार धार्मिक भिन्नता का कोई स्थान नहीं है वह सभी को सामान समझते थे| मानवता को धर्म से अधिक महत्व देते थे मानवता तथा समाज स्वेवा को ही धर्म का परम कर्तव्य मानते थे |

"ईश्वर न काबा मे है न काशी मे है वह घर घर मे व्याप्त है वह हर दिल मे मौजूद हैं"

गांधी जी के दार्शनिक विचार उनके सिधान्तो पर आधारित है |जिसे उनके जीवन दर्शन के प्रमुख तत्व भी कहा जा सकता है | जिसमे से **प्रमुख हैं -** सत्य , अहिंसा ,निर्भीकता ,सत्याग्रह **और** सर्वोदय |

सत्य के बारे मे गांधी जी का मानना था कि यह वोह माध्यम है जिसके सहारे इंसान ईश्वर को प्राप्त कर लेता है| सत्य मनुष्य की आंतरिक शक्ति है . गांधी जी का कहना था की सत्य का प्रयोग केवल वाणी तक सीमित न होकर उसे अपने व्यवहार मे लाना चाहिए | यदि व्यक्ति मन ,कर्म, वचन से सत्य का पालन करता है तो उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है | गांधी जी का कहना था की 'भगवान् ही सत्य' है फिर इसे उन्होंने 'सत्य ही भगवान् है' मे बदल दिया | गांधी जी कहते है , "मैं ३० साल से जिस चीज़ के लिए लालायित हूँ वो है ईश्वरकी प्राप्ति, मोक्ष और खुद की पहचान | इस लक्ष्य को पाने के लिए ही मै जीवन व्यतीत करता हूँ और जो कुछ भी मै बोलता ,लिखता हूँ या फिर राजनीती मे जो कुछ भी करता हूँ वह सब इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ही है|"

'अहिंसा' गांधी जी का मुख्य सिद्धांत था जो की उनके जीवन और विचारो मे समाया हुआ था | गांधी जी अहिंसा के सिद्धांत के प्रवर्तक तो नहीं थे मगर वह इसे राजनीति के क्षेत्र मे प्रयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे | उनके अनुसार अहिंसा का अर्थ सभी जीवधारियों के प्रति प्रेम और सहयोग की भावना से है | अहिंसा जीवधारियो के प्रति बुरी भावना को दूर करती है तथा उनके प्रति प्रेम और सहायक आदि भावना को जगाती है जिससे एक अच्छे वातावरण का निर्माण हो जाता है जो सभी को सुख पहुचाने का कार्य करता है | गांधी जी सत्य को साध्य और अहिंसा को साधन मानते थे उनके अनुसार सत्य की प्राप्ति अहिंसा से ही संभव है | सत्य और अहिंसा का मार्ग कायरता का मार्ग नहीं है तथा कायर व्यक्ति अहिंसा के मार्ग पर नहीं चल सकता इसके लिए निडरता तथा साहस की आवश्यकता होती है|गांधी जी कहते है "जब मैं निराश होता हू तब मैं याद करता हूँ कि हालाँकि इतिहास सत्य का मार्ग होता है परन्तु प्रेम इसे जीत लेता है यहाँ अत्याचारी और हत्यारे भी हुए है और कुछ समय के लिए वे अपराजय लगते थे लेकिन अंत मे उनका पतन ही होता है"|

महात्मा के कुछ दुर्लभ कथन हैं -

"एक आँख के बदले दूसरी आँख पूरे संसार को अँधा बना देगी"

"मरने के लिए मेरे पास बहुत से कारण है किन्तु मेरे पास किसी को मरने क कोई भी कारण नहीं है" |

इस प्रकार के अहिंसा के विचार रखने वाले गांधी जी प्रेम और दया के भण्डार थे |

इन सिद्धान्तो को लागु करने मे , दुनिया को दिखाने मे , गांधी जी ने तार्किक सीमा पर ले जाने मे भी मुह नहीं मोड़ा जब पुलिस और सेना भी अहिंसात्मक बन गई थी |गांधी जी ने एक अहिंसावादी राज्य की कल्पना की थी |उनका कहना था , " यह कहना गलत होगा की अहिंसा का अभ्यास केवल व्यक्तिगत तौर पर किया जा सकता है और व्यक्तिवादिता वाले देश इस का पालन नहीं कर सकते| शुद्ध आराजकता का निकटतम दृष्टिकोण अहिंसा पर आधारित लोकतंत्र होगा इसी प्रकार समप्रदायिकता के लिए कोई स्थान नहीं होगा |इस समय भी पुलिस बल की आवश्यकता हो सकती है जिनका कार्य अहिंसा का अभ्यास करना तथा लोगो की मदद करना होगा जिससे वोह अहिंसा के साथ उनके उपद्रव को प्रेम से सुलझा देगे | ऐसे किसी भी देश या समूह जिसने अहिंसा को अपनी नीति बना लिया है उसका परमाणु बम भी कुछ नहीं बिगाड सकता |"

'निर्भीकता' के विषय मे गांधी जी कहते है जो इंसान सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन नहीं कर सकता है वह निर्भीक नहीं है अर्थात डरपोक है उसके मन मे डर भरा हुआ है गांधी जी ने लिखा है "निर्भयता का अर्थ है समस्त बाहरी भयो से मुक्ति , जैसे बीमारी का भय ,शारीरिक चोट या मृत्यु का भय, संपति विहीन होने का भय , अपने प्रियजन की मृत्यु का भय , प्रतिष्ठा खोने का भय,अनुचित कार्य करने का भय इत्यादि |

'सत्याग्रह' शब्द का प्रयोग अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए किया जाता है| गांधी जी कहते है, सत्य का दृढ अवलम्बन सत्याग्रह से तात्पर्य विरोध पर बल प्रयोग न करके स्वंय कष्ट को सहकर विरोधी को सही मार्ग पैर लाने से है अर्थात सत्य की विजय से है | गांधी जी के अनुसार, सत्याग्रह एक युक्ति थी जिसे वह सामाजिक और राजनैतिक दोषों को दूर करने मे प्रयोग करते थे|

सत्याग्रह के कई रूप होते है जैसे असहयोग ,स्वैच्छिक पलायन ,अनशन या उपवास ,हड़ताल ,धरना आदि|

'सर्वोदय' सम्बन्धी विचारो का गांधी जी के दर्शन मे सर्वाधिक महत्व है| गांधी जी को सर्वोदय सम्बन्धी विचारो की प्रेरणा रस्किन की पुस्तक "अन्टू थिस लास्ट" नमक पुस्तक के अध्ययन से हुई | गांधी जी की अंतरआत्मा का रचनात्मक प्रतिबिम्ब इस ग्रन्थ मे था | इसको अध्ययन करने के बाद उन्होंने अपने विचार संसार के सामने रखे| गांधी जी **ने** ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रतिपादित किया और ऐसे अर्थशास्त्र का खंडन किया जो मुनाफाखोरो को फ़ायदा पहुचाए | उनके अनुसार हमको उतना ही ग्रहण करना चाहिए जो सब को मिल सके| समानता की बात करते थे गांधी जी| ऐसा न हो कि कुछ लोगो की आमदनी अधिक हो और कुछ गरीबी की रेखा पर हो | भंगी, डाक्टर ,वकील मजदूर सब को एक सा ही परिश्रमिक मिलना चाहिए| गांधी जी हस्तशिल्प की कला को बढ़ावा देते थे और मशीनीकारण के खिलाफ थे | जिस भूमि पर किसान मेहनत करके फसल उगाता है उस फसल पर किसान का उतना ही हिस्सा बनता जितना की ज़मीदार का | गांधी जी स्त्री और पुरुष दोनों को समान स्थान देते थे| बाल विवाह का जोरदार खंडन करते हुए अंतरजातीय विवाह के समर्थक थे | गांधी जी के अनुसार, सर्वोदयी वयवस्था की लागु करने के लिए यह आवश्यक है की प्रत्येक मानव मे आवश्यक सदगुण जैसे सत्य,अहिंसा ,अभय ,ब्रह्मचर्य ,अस्तेय,अपरिग्रह, खानपान मे संयम वैराग्य और आत्मत्याग ,शारीर श्रम ,सव्देसी ,सभी धर्मो के लिए आदर, तथा अस्पर्शता निवारण होने चाहिये |

गांधी जी एक प्रसिद्ध दार्शनिक, राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक होने के साथ-साथ एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे | गांधी जी ने देश की उन्नति के लिए समाज की उन्नति पर अधिक महत्व दिया है जिसकी प्राप्ति मे शिक्षा का प्रमुख स्थान है|उनकी बेसिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप है|

डॉ. एस एस पटेल ने कहा है "गांधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारो से यह स्पष्ट है कि वे पूर्व मे शिक्षा सिद्धान्त एवं वयवहार के प्रारंभिक बिंदु है |"

गांधी जी का मनना **था कि** जो शिक्षा विदेशी शासन मे भारतीयों पर थोपी गई वह दोष पूर्ण थी | क्यों कि इस शिक्षा से व्यक्ति शरीर से तो भारतीय रहता था परन्तु हिर्दय और मस्तिष्क से विदेशी हो जाता था |

गांधी जी की मान्यता थी कि , "यदि सत्ता पर हम आ भी **जाएँ** तब भी सामाजिक और आर्थिक स्वराज तब तक नहीं आ सकता जब तक शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बनाया जाता | अतः उन्होने बेसिक शिक्षा दर्शन देश के समक्ष रखा |

गांधी जी के बेसिक शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त निम्न हैं|

- ७ वर्ष से १४ वर्ष तक बालको को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाए |
- शिक्षा का माध्यम मात्र भाषा हो|
- बालक की सम्पूर्ण शिक्षा का केंद्र कोई हस्त शिल्प हो|
- इस शैक्षिक योजना के फलस्वरूप अध्यापक के परिश्रमिक की पूर्ती भी हो सकेगी|
- यह योजना भारतीय सस्कृति के मूल्य दर्शन – सत्य व अहिंसा पर आधारित है|
- इस पद्धति से बालको मे स्वावलंबन व श्रम करने की आदत पड़ेगी| यह पद्धति श्रम के महत्व को स्वीकार करती है |
- इस पद्धति से सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक सामाजिक भावना का विकास होगा |

गांधी जी के विचार शिक्षा के लिए गहरे और सर्वव्यापी थे |उनका उद्देश्य था की गरीब लोग शिक्षा प्राप्त करे इसलिए गांधी जी ने निशुल्क शिक्षा की बात की |

गांधी जी के अनुसार "सच्ची शिक्षा वह है जिससे बालको के शरीर ,मस्तिष्क तथा अध्यात्मिक विकास हो" गांधी जी शिक्षा के द्वारा बेरोज़गारी भी दूर करना चाहते थे |चारित्रिक एवं नैतिक विकास को भी शिक्षा का आधार बनाना मुख्य उद्देश्य था | गांधी जी की शिक्षा दर्शन **का** उद्देश्य सांस्कृतिक विकास के साथ -साथ आत्मा का विकास करके ईश्वर की प्राप्ति करना था |

वर्तमान युग **का विश्लेषण**

वर्तमान युग बहुत ही दु:खपूर्ण है | मानवता के नाम पर समाज के सज्जन पुरुष समझे जाने वाले लोग अपने 'मैं' के मन के भाव को ऊँचाईयों पर देखना चाहते है | इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार है | "मैं" की मर्यादा के लिए वह मानवता,संस्कृति, धर्म **और** समाज सब की बलि देने को तैयार है | ऐसे स्वार्थ के लिए मरने वाले व्यक्ति अपने जीवन को शांति एवं अहिंसा का पुजारी बताते है | जबकि अहिंसा का **अंश** तो दूर वह इस वर्णमाला को ही नहीं जानते जिनसे अहिंसा की आकृत बनाइ जाती है |

पर्तिस्पर्धा का दौर है हर व्यक्ति का स्वार्थ दुसरे से आगे जाना चाहता है चाहे इसके लिए अपने प्रतियोगियों के जीवन के साथ मौत का खेल ही क्यू न खेलना पड़ जाय किन्तु उनको जीत चाहिए | ऐसा तो उस युग मे भी नहीं था जब एक राज्य मे एक ही सिहासन और एक ही राजा हुआ करता था| मर्यादा के लिए अपनी जान दे दिया करते थे लोग, जबकि आज कल जान लेना जानते है **मर्यादा कि परवाह कोई नहीं करता**| रूपये की हवस ने तो अँधा ही बना रखा है रुपया आना चाहिए कहां से आए इससे कोई मतलब नहीं, बस चले तो भूखे की भीख के पैसे भी हडप लें | प्रतिस्पर्धा है तो सिर्फ बुरे कर्मो की है बुरे की है बुरे बनने की है|

आज ऐसी प्रविति देखने को मिलती है कि, मस्जिद में नमाज पढ़ ली तो हम पुण्यात्मा हो गए | भगवान् को तो रोज़ ही चढ़ावा **चढ़ाया** करते ही है बस सारे पाप तो धुल गए और वैसे भी यदि सभी पुण्य करेंगे

तो पाप भी तो करने वाला होना चाहिए | समाज मे कोई और यदि वह मै ही हूँ तो उसमे बुरा ही क्या है ऐसे विचार रखते है महाशय|

हिंसा को तो वीरता की निशानी बना रखा है असभ्यता को जीवन का आचरण | तो कौन कह सकता है कि ऐसे लोग गलत मार्ग पर है | समाज मे आनेको बुराइया विकसित हो चुकी है और लोग उसे अपनी नजरो मे स्थान दे चुके है , **उनको सामाजिक मान्यता प्राप्त हो चुकी है** | करे भी तो क्या करे जीवन है अनमोल जीने के लिए कुछ भी कर सकते है परंतु सत्य **सबसे दूर होता जा रहा है | आज जीवन का उद्देश्य मोक्ष नहीं धन हो गया है | और इस धन के लिए सत्य की आहुति भी देनी पड़े तो कोई संकोच नहीं** | क्या होता है सत्य , ऐसा तो कभी सुना ही नहीं |

असत्य लोगो के लिए चालाकी का महामन्त्र बना हुअ है सीधे लोग तो बेवकूफ की श्रेणी मे आते है | चोरी ,डकैती ,लूट मार आदि तो असभ्य लोगो के कृत्य हैं परन्तु अफ़सोस तो इस बात का है कि हमारे समाज का जो पढ़ा लिखा वर्ग है जो खुद को सभ्य कहता है और जिसे सभी सभ्य कहते है , वक्त आने पर असभ्यों से भी पतित आचरण करता है | सभ्यता और शिक्षा की अवधारणा कही देखने की नहीं मिल रहा है | चोर तो चोरी करे गा ही उसका काम ही है यह परन्तु वह व्यक्ति जो स्नातक की डिग्री लिए सरकारी दफ्तर मे बैठा है और समाजसेवा का झूठा ढोंग करता रहता है वोह चोरी करे तो कैसा महसूस होगा | भ्रष्टाचार्य तो ऐसा समाज मे बैठा है जैसे कोई राजा अपने सिहासन पर बैठता है |अपनी श्रेष्ठता को साबित करने के लिए हजारो की संख्या मे बेकुसूर लोगो की जानो को मज़ाक बना कर उनके जीवन से खेल खेला जाता है क्या इसी समाज की कल्पना महात्मा गांधी ने की थी ?

जिससे न्याय मिलना चाहिए वही अन्याय का पुजारी बना बैठा है जिससे सहायता चाहिए वही लोगो को असहाय बनाए पडा है लोगो को रोजगार देने वाला वाला अधिकारी समाज को बेरोजगार बना रहा है यह कैसा समाज है | शिक्षा देने वाला **खुद अशिक्षित है और दूसरों को भी** अशिक्षित कर रहा है | इसका यह मतलब नहीं की कोई कार्य नहीं हो रहा है बल्कि कार्य सभी हो रहे है परन्तु सही तरीके से नहीं हो रहे है | समाज अशांत है | भय मे ज़िन्दगी गुज़ार रहा है | देवी सामान स्त्री की मर्यादा की धज्जियां उड़ाई जा रही है | बलात्कार ,हिंसा ,असत्य ,भ्रष्टाचार,अत्याचार ,आशांति सभी का बोल-बाला है |

कुछ लोग समाज मे ऐसे भी है जो अपनी मर्यादा को समझते हुए अपने सामाजिक कर्तव्यो को निभाते है और समाज में एक अच्छा सा वातावरण बनाए रहते है परन्तु ऐसे लोगो की सख्या बहुत कम है |

आजके इस युग की समस्याओं से सभी पीड़ित है और ऐसे समय मे महात्मा गांधी जी के विचार याद आते है और गाँधी का जीवन दर्शन आज सर्वाधिक प्रासंगिक भी है | समाज मे फैली हिंसा की आग को बुझाने के लिए मनुष्य को अपने अन्दर की आग को बुझाना होगा | गांधी जी अहिंसा का मुख्य कारण क्रोध को बताते है |

" क्रोध एक प्रचंड अग्नि है, जो मनुष्य इस पर वश कर लेगा वह इस अग्नि को बुझा देगा और जो मनुष्य इस अग्नि पर वश नही कर पता इसकी आग मे जल जाता हैं" |

क्रोध एक ऐसी ज्वाला है जिसकी वजह से थोडी सी बात ही बड़ी समस्या मे बदल जाती है | गांधी जी कहते है यदि मानुष क्रोध पर अपना काबू कर लेगा तो बडी सी बडी मुसीबत को हसते हुए सह सकता है और समस्या का समाधान भी निकाल सकता है|

संसार मे फैली अशांति को दूर करने का यदि कोई तरीका है तो वह प्रेम है| हिंसा के माध्यम से किसी भी मनुष्य या किसी भी संगठन को सही मार्ग नहीं दिखाया जा सकता| हिंसा हिंसा को बढ़ाती है नाकि कम करती है | मनुष्य को अपनी इच्छाओ को याद करते समय दुसरेमनुष्य की इच्छाओ के बारे मे भी सोचना चाहिए जैसा अपने लिए सोचे वैसा ही दुसरेके लिए भी करे |

इस विषय मे गांधी जी कहते है :

"जिस मनुष्य ने अपनी इच्छाओ को त्याग दिया | मै और मेरे के मन के भाव को दूर कर दिया शान्ति उसी को प्राप्त होती हैं" |

समाज में शान्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात गांधी जी ने बताई है , "मैं और मेरे मन का भाव यही वह कारण है जो संसार मे अशान्ति और हिंसा को बढ़ावा दे रहा है| जब मन ही शांत न होगा तो संकल्प और विचार कहां से शान्ति के आयेंगे | अपने स्वार्थ के लिए जीना छोड़ना होगा शान्ति की प्राप्ति के लिए प्रेम भाव अपनाना पडता है |""यदि संसार मे मनुष्य को अपनी ओर खीचने वाला कोई चुम्बक है तो वह प्रेम हैं" |

गांधी जी ने सारे संसार को इस प्रेम पथ पर चल कर दिखा दिया | प्रेम भाव से ही गांधी जी सभी के हदय पर अपना प्रभाव छोड़ देते थे जो व्यक्ति एक बार उनसे मिलता था उनकी बातो मे मगन हो जाता था| ऐसा प्रेम भाव था उनकी वाणी मे **और** उनके आचरण मे |

गांधी जी कहते थे "पाप तब ही नहीं होता जब आप के आचरण मे आ जाए तब उसकी गिनती पाप की श्रेणी मे होती है बल्कि पाप जब दृष्टि मे आ गया विचार मे आ गया बस हो गया" |

गांधी जी के अनुसार पाप करने का विचार आना ही पाप है इस प्रकार की सोच ही संसार मे शान्ति ला सकती है | आज संसार मे हिंसा को दबाने के लिए हिंसा **का** प्रयोग किया जाता है जो की एक महा अनर्थ से कम नहीं है इतिहास गवाह है कोई भी हिंसा या किसी भी झगडे को हिंसा से नियंत्रित करने से केवल कुछ समय के लिए ही हिंसा को रोका ज सकता है परन्तु अहिंसा का मार्ग ऐसा मार्ग है जिसमें बड़ी से बड़ी हिंसा को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया है |

गांधी जी के विचार आज भी संसार के लिए उतने ही उपयोगी है जितने **कल** थे | आज भी यदि हम देखे जिन जिन देशो मे हिंसा को रोकने के लिए या किसी को रोकने के लिए हिंसा क सहारा लिया गया, क्या वहां आज शांति है ? इराक – अफगानिस्तान - **लीबिया – मिस्र – पाकिस्तान – सोमालिया आदि अनेकों देश हिंसा कि आग में रोज़ जलते हैं** लाखो बेगुनाह मारे जाते हैं | इतने वर्षो बाद भी हिंसा पर **हिंसा से** कोई भी नियंत्रण नहीं किया जा सका |यदि यही कार्य अहिंसात्मक ढंग से किया जाता प्रेम प्रयोग कर के किया जाता ,सत्य की राह मे क्या जाता आत्मा की शक्ति और समानता की दृष्टि से क्या जाता तो आवश्य कामयाबी मिलती अनगिनत लोग हिंसा को त्याग कर सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चल रहे होते समाज मे शांति और मानवता का सूर्य जगमगा रहा होता |

भारतीय समाज की बात करें तो मनुष्य जीवन जन्म के बाद जब शिक्षा प्राप्ति कि दिशा में आगे बढ़ता है तब उसका सामना एक दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था से होता है| एक ऐसी व्यवस्था जो मनुष्य को प्रशिक्षित करती है शिक्षित नहीं करती | विद्यार्थी प्रारंभ से ही डॉक्टर ,इंजिनियर आदि बनने के लिए प्रशिक्षित किये जाते हैं| ऐसी व्यवस्था विद्यार्थिओं को खुल कर सोचने या समझने नहीं देती बल्कि जिस तरह कंप्यूटर में सॉफ्टवेयर अपलोड करते हैं वैसे ही प्रशिक्षण उनके अन्दर अपलोड किया जाता है | यही कारण है कि भारत में दार्शनिक , सिद्धान्तकारों और मौलिक विचारों की कमी प्रतीत होने लगी है|

बेसिक शिक्षा मनुष्य का मौलिक अधिकार है और यदि यही दोषपूर्ण होगी तो मनुष्य का भविष्य भी दोषपूर्ण ही होगा| अतः महात्मा गाँधी के दर्शन के अनुरूप बेसिक शिक्षा में सुधार आवश्यक हैं|

गाँधी केवल एक नाम , एक व्यक्ति , एक महात्मा नहीं हैं | गाँधी एक विचार हैं | एक ऐसा विचार जो कि प्रेम , शांति , सौहार्द , सर्वधर्म समभाव, और आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है | गाँधी जी ने अपने जीवन में कोई दैवीय कार्य नहीं किया बल्कि उन्होंने मनुष्य को देवत्व का मार्ग दिखाया| एक शांत , प्रगतिशील और सौहार्द्यापूर्ण समाज किसी भी विकास की अनिवार्य आवश्यकताएं हैं और गाँधी जी के जीवन दर्शन को अपने जीवन में ढालकर इन आवश्यकताओं की पूर्ती की जा सकती है| एक ऐसे समाज का निर्माण संभव है जिसमें सबका कल्याण संभव हो सके , आवश्यकता केवल अपने हृदय में बसे महात्मा को फ़ुर्जीवित करने की है|

संदर्भ सूची

1. डॉ.अरुणा गुप्ता ,डॉ.उमा टंडन ,उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक , २००५ प्रथम,आलोक प्रकाशन, ,लखनऊ
2. एन आर सकसेना ,एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी , २०१०, आर लाल ब्बूक डिपो,मेरठ
3. प्रो. मेहता एवं खन्ना ,राजनैतिक विज्ञान, २०१२ ,एस.बी.पि.डी. पब्लिकेशन हाउस , आगरा
4. कोई भला कैसे भूले गा जलीय वाला बाग़ को ,प्रभि शाक्षी, २००७
5. महात्मा गांधी ,भारतं कुमारप्पा ,फॉर पेसिफिस्ट , १९४९, नव जीवन प्रकाशन हाउस ,अहमदाबाद
6. महात्मा गांधी ,सत्य के साथ मेरे प्रयोग,प्रभात प्रकाशन